>

Title: Regarding ongoing protest in Haridwar, Uttarakhand for cleaning the rivers Ganga and Yamuna.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह: वह मैंने दिया हुआ है, लेकिन उससे पहले पटना का आ गया, उसका भी हमने समर्थन किया।

अध्यक्ष महोदया: अब बोलिये।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : महोदया, हिन्दुस्तान में हजारों नदियां हैं। वे केवल जल की धारा नहीं हैं, जीवन की धारा हैं। नदियों से हमारे देश की संस्कृति जुड़ी हुई है। खास करके भारत सरकार ने 40 नदियों को सफाई और पर्यावरण के दृष्टिकोण से चुना है, लेकिन गंगा, यमुना, गोदावरी, ये सब नदियां, जो लोग कहते हैं कि नदियों के किनारे जंगल उगते हैं, नहीं-नहीं, महोदया, गंगा नदी, यमुना नदी के किनारे सभ्यता-संस्कृति उगी हुई है। दुनिया में नदियों के किनारे पर जंगल उगते हैं, यहां संस्कृति उगी हुई है। तमाम शहर इनके किनारे बसे हुए हैं। गंगोत्री से लेकर नीचे गंगासागर तक और यमुनोत्री से लेकर दिल्ली, मथुरा सारी जगहों पर शहरों का कचरा नदियों में डाला जाता है।

डॉ. राम मनोहर लोहिया ने कहा था, हालांकि लोग मुझे अधर्मी कहते हैं, मतलब वह अनिश्वरवादी थे, नास्तिक थे, लेकिन उन्होंने कहा, हिंदुस्तान में नदियां साफ करो, कार्यक्रम होना चाहिए। जहां पर लाखों-करोड़ लोग साल में जाते हैं, लाखों लोग जिन तीर्थों में जुटते हैं, उनकी सफाई व आने-जाने की व्यवस्था सही होनी चाहिए। जैसे हमारा पहाड़ी प्रदेश है, अमरनाथ में सुप्रीम कोर्ट ने नोटिस लिया, वहां सौ यात्री मर गए, भारत सरकार ने क्या किया, क्या जवाब दिया है? अमरनाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री और वहां एक लाक्षागृह है, रास्ते में हमने देखा, वहां चमकीले महादेव हैं, चारों तरफ वहां ट्राइबल्स हैं। वहां कोई इंतजाम नहीं है, जबकि लाखामंडल रास्ते में है।

गंगा जी को राष्ट्रीय नदी सरकार ने घोषित किया है, तो यमुना नदी को क्यों छोड़ दिया? गंगा-यमुना का संगम है। यूपी के इलाहाबाद में कुंभ आने वाला है। लाखों श्रद्धालु देश भर से वहां जुटेंगे। सुना है कि गंगा प्राधिकर बना है। यमुना प्राधिकरण क्यों नहीं बना? यहां यमुना के किनारे देश की राजधानी

है, वहां मथुरा कृष्ण भगवान का स्थल है, सब जगह यमुना नर्क की तरह है। गंगा, युमना की यह दुर्दशा है। एक स्वामी शिवानन्द अनशन कर रहे हैं, मर जाएंगे, शहीद हो जाएंगे, उनके शिष्य निगमानंद 100 दिन के बाद शहीद हो गए, लेकिन यहां सवाल भी नहीं उठा। यह कैसी स्थिति है? हम भारत सरकार से जानना चाहते हैं कि गंगा, यमुना और इस तरह की नदियों की सफाई का, उनका कचरा रोकने का, उसमें जो दाह-संस्कार होते हैं, उसकी कैसे सफाई हो, इसकी सरकार ने क्या व्यवस्था की है?

दूसरा, जो यह तिरुवलोक तीर्थ है, जहां लाखों लोग हर साल जाते हैं, वहां जाने-आने और सफाई का क्या प्रबंध है? हमारे यहां वैष्णो देवी में बहुत अच्छी व्यवस्था है। लोग कहते हैं कि हर जगह वैष्णो देवी की तरह व्यवस्था हो। इसलिए उन पहाड़ी प्रदेशों के अंदर जो हमारे तीर्थ हैं, जहां पर लाखों-करोड़ लोग हर साल आते-जाते हैं, उनके प्रति लोगों के मन में श्रद्धा है। जो लोग वहां जुटते हैं, वे तकलीफ पाते हैं। इसलिए जैसे वैष्णो देवी की व्यवस्था है, उसी तरह से बद्रीनाथ धाम, गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ धाम, अमरनाथ, पांचों तीर्थस्थल और लाखा मंडल इन सबका विकास हो, वहां आने-जाने की व्यवस्था हो और गंगा, यमुना और गोदावरी की सफाई हो। ...(व्यवधान) स्वयं सच्चिदानन्द वहां गंगा जी की आरती उतारते हैं। सभी साधु-संतो से, राज्य सरकारों से, एनजीओ से और भारत सरकार से कहना चाहता हूं कि सब मिलकर के नदियां साफ करो और तीर्थ स्थानों पर सफाई और यात्रियों के आने-जाने, ठहरने का उचित प्रबंध हो, यही मुझे कहना है।

अध्यक्ष महोदया :

श्री शैलेन्द्र कुमार,

श्री सतपाल महाराज,

श्री उमाशंकर सिंह,

श्री इज्यराज सिंह,

श्री गोरखनाथ पाण्डेय,

श्री कपिल मुनि करवारिया,

श्रीमती बोचा झांसी लक्ष्मी और

श्री कमल किशोर 'कमांडो' अपने आपको श्री रघुवंश प्रसाद सिंह जी के विषय के साथ संबद्ध करते हैं।